यूसेफी
शिक्षा से रिश्तों के पुल

कार्यकारी निदेशक जेन ई. शुकोस्के से लॉरिंडा कीज लौंग की बातचीत

वह वकील हैं, कानून की प्रोफेसर हैं, शिक्षाविद हैं, शोधकर्ता-लेखक-एक्टिविस्ट हैं, वरिष्ठ फुलब्राइट अध्येता हैं और व्याख्याता एवं प्रशासक हैं। इस बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी हैं जेन शुकोस्के। वह मई 2000 से फुलब्राइट कमीशन के नाम से प्रख्यात उस संस्थान की प्रमुख हैं जिसका असली नाम यू.एस. एजुकेशनल फाउंडेशन इन इंडिया (यूसेफी) है। इस संस्थान की स्थापना शैक्षणिक आदान-प्रदान के माध्यम से भारतीयों और अमेरिकियों के बीच आपसी समझदारी बढ़ाने के उद्देश्य से वर्ष 1950 में एक समझौते के तहत हुई थी। यूसेफी के मार्गदर्शन, सलाह, प्रोत्साहन, जानकारी और वित्तीय मदद से दोनों देशों के विद्वान, प्रोफेशनल विशेषज्ञ, अध्यापक और शोधकर्ता (प्रोफेसर शुकोस्के जैसे लोग) एक-दूसरे देश की यात्रा कर पाते हैं।

विश्वव्यापी फुलब्राइट कार्यक्रम के अंग के तौर पर मूलत: अमेरिका की सरकारी एजेंसियां शोधवृत्ति का खर्च उठाती हैं लेकिन यूसेफी हमेशा ही अमेरिका और भारत में ऐसे शैक्षणिक संस्थानों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों और संगठनों की तलाश में रहता है जो किसी व्याख्याता-छात्र-शोधकर्ता की यात्रा को प्रायोजित करने में सहायक हो सकें। यूसेफी अमेरिकी विदेश मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित हंफ्री फेलोशिप, फोर्ड फाउंडेशन द्वारा वित्त पोषित इंटरनेशनल फेलो प्रोग्राम और अन्य का संचालन करती है। यह संस्था कॉन्फ्रेंस और कार्यशालाएं आयोजित करती है और पूर्व फुलब्राइट शोधार्थियों के कार्यक्रम प्रायोजित करती है जो अपने मूल देश लौटकर अपने अनुभव और शैक्षिक ज्ञान को औरों के साथ बांटते हैं। यूसेफी बोर्ड के पांच भारतीय और पांच अमेरिकी सदस्य स्वैच्छिक रूप से अपना समय निकालकर फाउंडेशन को सलाह देते हैं, उसके बजट को स्वीकृत करते हैं और अमेरिका में शोधवृत्तियों के लिए सुयोग्य आवेदकों की संस्तुति करते हैं।

हाल ही में नई साज-सज्जा वाले नई दिल्ली स्थित अपने मुख्यालय और मुंबई, चेन्नई और कोलकाता स्थित अपने कार्यालयों से यूसेफी अमेरिका के 3600 मान्यता प्राप्त कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में से किसी में भी उच्च शिक्षा पाने के इच्छुक छात्रों को पूरे भारत में अद्यतन, सही और पूर्वाग्रहरहित मार्गदर्शन उपलब्ध करवाती है।

छह साल पहले मेरीलैंड में यूनिवर्सिटी ऑफ बाल्टिमोर स्कूल ऑफ लॉ में एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत प्रोफेसर शुकोस्के अनुपस्थिति अवकाश लेकर यूसेफी की कार्यकारी निदेशक बनीं। वर्ष 1999-2000 में श्रीलंका में एशिया की वरिष्ठ फुलब्राइट शोधकर्ता के रूप में शुकोस्के को अक्सर भारतीय विधि संस्थानों में भाषण देने के लिए निमंत्रित किया जाता था। इसी दौरान वह भारत की 'जीवंतता और गर्मजोशी' से परिचित हुईं और उन्हें यूसेफी में पद रिक्त होने का पता चला। यह दो साल का कार्यभार था लेकिन अपने काम की चुनौतियों और उनसे मिलने वाली ऊर्जा से उत्साहित हो कर वह यहीं रूक गईं। प्रस्तुत है स्पैन से उनकी बातचीत का विवरण:

यूसेफी कार्यक्रम अमेरिका (और भारत) के लिए महत्वपूर्ण क्यों हैं?

यूसेफी दोनों देशों के लिए एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक-सांस्कृतिक सेतु है। कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में भारत-अमेरिका शैक्षणिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान यूसेफी का लक्ष्य है और यह भारतीयों और अमेरिकियों के बीच आपसी समझदारी, दोस्ती और व्यावसायिक संबंधों को पुष्ट करने वाली उस जन आधारित कूटनीति का हिस्सा है जिसे अमेरिका बहुत महत्व देता है। जहां तक भारत का सवाल है यूसेफी की शोधवृत्तियां प्राचीन और समकालीन भारत के बारे में समझदारी को बढ़ाती हैं और अमेरिकी व्याख्याताओं को भारतीय कक्षाओं में पहुंचाती हैं। यूसेफी की शैक्षणिक परामर्श सेवाएं भारतीय छात्रों के लिए अमेरिकी उच्च शिक्षा के बारे में सही जानकारी उपलब्ध करवाती हैं।

फुलब्राइट विद्वानों के चुनाव के लिए आपके मानदंड क्या हैं?

हमें ऐसे लोगों की तलाश है जिनके पास एक निश्चित समय में पूरा हो सकनेवाला स्पष्ट शोध प्रस्ताव हो। उन्हें यह बताना पड़ता है कि इस शोध के लिए अमेरिका जाना जरूरी क्यों है और यह भारत के लिए कैसे प्रासंगिक है। फुलब्राइट शोधवृत्तियों के लिए हमें ऐसे लोगों की तलाश रहती है जो बढ़िया सांस्कृतिक दूत सिद्ध हों और भारत लौटकर अपने कार्यक्षेत्र में अर्जित की गई विशेषज्ञता और अनुभव को दूसरों के साथ बांटने के इच्छुक हों।

लॉरिंडा कॉप लॉपॉ

भारत के बाहर पढ़ाई के इच्छुक छात्रों में 80 फीसदी ग्रेजुएट प्रोग्राम के लिए जाना चाहते हैं लेकिन अब अमेरिका में अंडरग्रेजुएट स्तर की पढ़ाई को लेकर भी दिलचस्पी बढ़ रही है।

क्या किसी खास किस्म की शोध परियोजना के स्वीकृत होने के अवसर अधिक होते हैं ?

फिलहाल हम मौजूदा दौर के मुद्दों पर केंद्रित हैं। इसमें बहुत से क्षेत्र आते हैं। बात यह नहीं है कि कोई खास क्षेत्र जादुई साबित होगा। कोई सचमुच ही बढ़िया आइडिया जो दोनों देशों के लिहाज से प्रासंगिक हो, इस मामले में कुंजी साबित हो सकता है।

चयन समितियां किस तरह के व्यक्तित्व को पसंद करती हैं ?

हमें ऐसे स्व-स्फूर्त लोगों की तलाश रहती है जो अमेरिका में शोध और अध्ययन करते हुए वहां के समाज से संवाद स्थापित कर पाएं और भारत लौटकर अपने संस्थानों के दायरे के बाहर भी योगदान कर सकें। हम अक्सर अमेरिका में उनके द्वारा किए काम के बारे में बताने के लिए बोलने के मौके जुटाते हैं। कुछ लोगों को अमेरिका जा रहे शोधार्थियों को जानकारी देने में मदद के लिए बुलाया जाता है।

क्या इसके लिए उन्हें कुछ वेतन मिलता है ?

बताने लायक नहीं। एक तरह से टैक्सी का किराया भर.....

फुलब्राइट शोधवृत्तियों को लेकर आमतौर पर कैसी भ्रांतियां देखने में आती हैं ?

फुलब्राइट की चुनाव प्रक्रिया वाकई पारदर्शी और योग्यता पर आधारित है-लेकिन कभी-कभी लोगों को इस पर विश्वास नहीं हो पाता। हमारी प्रक्रिया की निष्पक्षता की खासी धाक है और मुझे बहुत खुशी है कि मेरे काम में कभी दखलंदाजी नहीं हुई।

आपको अपने काम का कौन-सा भाग सबसे ज्यादा पसंद है ?

इसमें मेरी अक्लमंदी का पूरा-पूरा इस्तेमाल होता है। इस काम के कई पक्ष मुझे ऊर्जा से भर देते हैं: जबर्दस्त प्रतिभाशाली बोर्ड सदस्यों, विद्वानों, छात्रों और कर्मचारियों के साथ काम करना। यूसेफी समर्थित अंतर-सांस्कृतिक अध्ययन को व्यक्त करने वाली रचनात्मक कार्यशालाओं का खाका बनाने वाले समूह का नेतृत्व और हमारे शोधार्थियों की भागीदारी वाली सहयोगी परियोजनाओं को प्रोत्साहन। रोजमर्रा के काम की बात करें तो पर्यावरण अर्थशास्त्री जिम स्टीवेन्स को मिजोरम भेजना बहुत ही संतोषप्रद रहा- मेरी स्मृति के अनुसार वहां काम करने वाले वह पहले अमेरिकी फुलब्राइट शोधार्थी हैं। भारत के लिए बेहद महत्वपूर्ण मुद्दों पर काम कर रहे हमारे फुलब्राइट छात्रों का उत्साह देखकर बहुत अच्छा लगता है। मिशेल रॉजेन्थाल ने महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा पर शोध किया है और रवि सतकलमी ने भारत लौटकर शासन में भारतीय-अमेरिकियों की भूमिका पर।

कोई ऐसा अनुभव जिसने आपको बहुत संतोष की अनुभूति दी हो..

समुदायों और संस्कृतियों की सीमाओं से परे जाकर लोगों का एक-दूसरे से सहयोग। फुलब्राइट शोधार्थियों ने एकजुट होकर सुनामी राहत का काम किया है, भारतीय और अमेरिकी लेखन पर पत्रिकाएं प्रकाशित की हैं, पर्यावरण संरक्षण की रणनीतियां बनाई हैं और भारत-पाक संवाद के क्रम को आगे बढ़ाया है। अंग्रेजी के भारतीय और पाकिस्तानी उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों का एक समूह अध्ययन के बाद अमेरिका से लौटकर अपने सहकर्मी अध्यापकों को प्रशिक्षित कर रहा है। नृत्य उपचारक प्रीति पटेल विशेष जरूरतों वाले वयस्कों और बच्चों के नृत्य दलों का नेतृत्व करती हैं।

भारत सरकार का यूसेफी से किस तरह का संबंध है ?

भारत सरकार शिक्षा, व्यवसाय और प्रशासन के क्षेत्रों से चुने गए पांच भारतीय बोर्ड सदस्यों को नियुक्त करती है। हमारे समझौते के अनुसार ये नियुक्तियां हर वर्ष होती हैं लेकिन अक्सर निरंतरता बनाए रखने के लिए लोगों को दुबारा नियुक्त कर लिया जाता है। भारत सरकार यूसेफी द्वारा चुकाए गए बिक्रीकर, आबकारी और सीमा शुल्क को वापस करती है। इसके अलावा निजी भारतीय संस्थान अक्सर संसाधन उपलब्ध करवाते हैं या कांफ्रेंसों के आयोजन के खर्च में भागीदारी करते हैं।

यूसेफी को वित्तीय संसाधन कहां से उपलब्ध होते हैं ?

हमारे ज्यादातर संसाधन तो अमेरिकी विदेश मंत्रालय से ही आते हैं। हमें अमेरिकी शिक्षा मंत्रालय से भी वित्तीय सहायता मिलती है। न्यूयॉर्क स्थित यू.एस. इंटरनेशनल फेलोशिप फंड और फोर्ड फाउंडेशन से भी धन मिलता है। हवाई के ईस्ट-वेस्ट सेंटर के स्थानीय प्रतिनिधि के रूप में हमारा अनुबंध हैं। पूर्व फुलब्राइट शोधकर्ता दान देते हैं और विश्वविद्यालयों के छात्र हमारे शैक्षणिक परामर्श कार्यालयों से प्राप्त सेवाओं के लिए शुल्क चुकाते हैं।

अमेरिका में उच्च शिक्षा के बारे में जानकारी लेने की फीस क्या है ?

यूसेफी का वार्षिक छात्र सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है। अन्य सेवाओं के लिए भी बहुत कम फीस है। हमारी फीस विदेश में शिक्षा के बारे में सलाह देने वाले निजी संस्थानों के मुकाबले बहुत कम है। विदेश में शिक्षा पाने की इच्छा रखने वालों में से 80 प्रतिशत लोग ग्रेजुएट अध्ययन के लिए जाते हैं, इसलिए वे विश्वविद्यालय में पढ़ते हुए ही सदस्यता ले लेते हैं। इधर हमने पाया है कि अमेरिका में अडंरग्रेजुएट शिक्षा पाने में भी रूचि बढ़ी है। इसलिए माध्यमिक विद्यालयों के छात्र और परामर्शदाता भी हमसे राय लेने के लिए आने लगे हैं।

अमेरिकी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के लिए भारतीय छात्र जुटाना महत्वपूर्ण क्यों है ?

अमेरिका जाने वाले भारतीय छात्र उद्देश्य से प्रेरित और श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले होते हैं। अपनी शैक्षणिक क्षमता के अलावा उन्हें अमेरिकी कक्षाओं में इसलिए भी महत्व मिलता है कि वे अपने साथ एक नया नजरिया भी लाते हैं।

अपनी नौकरी में आपको सबसे ज्यादा क्या पसंद है ?

इसकी रचनात्मकता की मांग मुझे पसंद है। तेजी से बदल रहे उच्च शिक्षा वातावरण में कुछ नया करने और लोगों तथा संस्थानों को जोड़ने के नए तरीकों के अवसर बढ़े हैं। हमारे शोधकर्ता बहुत से नए अंतर-सांस्कृतिक विषयों पर काम कर रहे हैं। अंतर-सांस्कृतिक संवाद का सूत्रधार होना बहुत मजेदार है। मेरी नौकरी में यही सब है।

यानी आप कुछ ऐसा कर रही हैं जिसका महत्व है ?

हां। इसका महत्व तो किसी भी युग में होता लेकिन अंतर-सांस्कृतिक गलतफहमियों के इस दौर में तो खासतौर पर है।

सबसे बड़ी चुनौती क्या है?

इस काम का सबसे चुनौती भरा पक्ष है निरंतर विकसित हो रहे उच्च शिक्षा वातावरण से कदम मिलाकर चलना। और यह बहुत ही संतुष्टि देने वाला भी है। अमेरिकी विश्वविद्यालयों से बहुत से प्रतिनिधिमंडल भारत आते हैं। कई का नेतृत्व खुद विश्वविद्यालय अध्यक्ष ही करते हैं। उनकी रूचि भारतीय संस्थानों से नए संबंध रचने में होती है। भारत अभी विदेशी शिक्षा संस्थानों के आगमन के नियमन की नीति पर विचार कर रहा है। नई संभावनाओं के बारे में सोचते हुए हमें नियमों पर भी नजर रखनी होगी। रचनात्मकता के साथ-साथ यथार्थ पर भी पकड़ बनाए रखना खासा चुनौती भरा है।

क्या आप साझा डिग्री, ऑन-लाइन डिग्री और भारत में अमेरिकी विश्वविद्यालयों की शाखाओं की बात कर रही हैं?

इन सभी की। अभी पिछले दिनों कुछ विशेषज्ञ भारत और अमेरिका के बीच वर्चुअल क्लासरूम स्थापित करने के लिए आए थे। हम ऐसे अमेरिकी संस्थानों को जानते हैं जो भारत में भौतिक रूप से मौजूदगी के इच्छुक हैं। कई संस्थानों इस तरह के ऐसे आपसी समझौते हैं कि भारतीय छात्र दो साल यहीं पढ़ाई करके आखिरी दो सालों के अध्ययन के लिए अमेरिका जाते हैं। इनमें से कुछ समझौते फिलहाल व्यावहारिक हैं, बाकी समझौतों के लिए भारत की ओर से ऐसे दिशा-निर्देशों का इंतजार है कि उनकी रूचि किस तरह की व्यवस्था में है। □

कैसे जुटाएं पढ़ाई का खर्च

मार्टिना शुल्ज

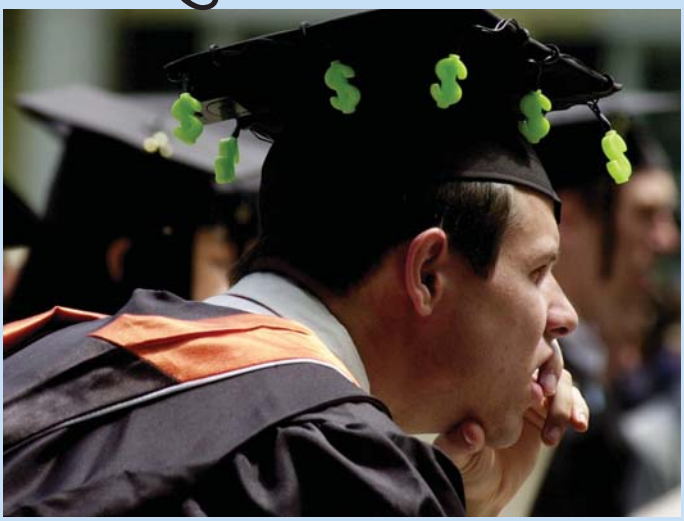

डैनियल हॉर्नस्टाइन © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

ग्रेजुएट दिवस के मौके पर प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी के जैरेट वाल्टर्स

ग्रेजुएट अध्ययन के लिए दूसरे देशों से आने वाले विद्यार्थी वित्तीय मदद के अपने आवेदन को कैसे सफल बनाएं, इस बारे में विशेषज्ञ की सलाह:

हर साल करीब पांच लाख अंतर्राष्ट्रीय छात्र अमेरिका के कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए आवेदन करते हैं। इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल एजुकेशन के मुताबिक उनमें से 67 प्रतिशत अपने कोर्स की फीस चुकाने के लिए अपने परिवार के पैसे पर ही निर्भर होते हैं। औसतन अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को अमेरिका में एक शैक्षिक वर्ष में 16,000 डॉलर से 46,500 डॉलर के बीच ट्यूशन और रहन-सहन का खर्च उठाना होता है।

अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को वित्तीय मदद कहां से मिलती है?

व्यक्तिगत संसाधनों के अलावा वित्तीय मदद के मुख्य स्रोत हैं-मेजबान केंद्रीय कॉलेज या विश्वविद्यालय जिनमें करीब 23 प्रतिशत सहायता देते हैं। इनके बाद स्थानीय सरकार और विश्वविद्यालय का नंबर आता है जिनके लिए यह आंकड़ा 2.4 प्रतिशत है। अगर कोई अंडरग्रेजुएट और स्नातक छात्रों के प्रतिशतों की तुलना करे तो पूरी तस्वीर बदल जाती है। कुल अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के करीब 10 प्रतिशत छात्रों को उनके मेजबान संस्थान से वित्तीय मदद मिलती है। उनमें से कई शोध कराने वाले संस्थानों में शोध और अध्यापन सहायक के तौर पर काम करते हैं। हां, मास्टर कार्यक्रमों के मुकाबले पीएच.डी. कार्यक्रमों के लिए ज्यादा संसाधन उपलब्ध हैं। और शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए आवेदन करने वाले छात्रों के लिए व्यावसायिक कार्यक्रमों के लिए आवेदन करने वाले छात्रों के मुकाबले ज्यादा आर्थिक मदद उपलब्ध है। विज्ञान के क्षेत्र में समाज विज्ञान से ज्यादा मदद उपलब्ध है। पढ़ाई के दूसरे साल में मदद की गुंजाइश बढ़ जाती है।

किस किस्म की वित्तीय मदद उपलब्ध है?

अंतर्राष्ट्रीय अंडरग्रेजुएट छात्र ज्यादातर निजी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में आंशिक छात्रवृत्ति के लिए आवेदन कर सकते हैं। वे एथलीट छात्रवृत्तियों के भी पात्र हैं और छात्र ऋण के लिए आवेदन कर सकते हैं। ग्रेजुएट छात्र शिक्षा, शोध और प्रशासनिक सहायक के तौर पर काम करने के लिए आवेदन कर सकते हैं। वे निजी और सरकारी विश्वविद्यालयों से फेलोशिप और छात्रवृत्ति पाने के लिए आवेदन कर सकते हैं। छात्र कर्ज के लिए आवेदन करना भी एक विकल्प है।

वित्तीय सहायता के लिए सफलतापूर्वक कैसे आवेदन करें?

शोध और अपनी तैयारियां जल्दी शुरु कर दें- बेहतर हो अध्ययन शुरू करने से 15 से 18 महीने पहले। स्थानीय सरकार और विश्वविद्यालय द्वारा दी जानी वाली छात्रवृत्तियों के बारे में जानिए और जल्दी आवेदन कीजिए।

अपना शोध कीजिए- एजुकेशन यूएसए-समर्थित सलाह केंद्र पर जाएं और अमेरिकी कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और संभावित विभागों पर विशेष संदर्भ सामग्री से रूबरू हों। इनसे आपको यह जानकारी मिलेगी कि आपको कितनी वित्तीय मदद मिल सकती है। जिन संस्थानों में आप आवेदन कर रहे हैं, उनमें से चार से छह संस्थानों के बारे में जितनी संभव हो, उतनी जानकारी इकट्ठी करने के लिए इंटरनेट का भी इस्तेमाल करें। अगर आप ग्रेजुएट छात्र हैं, तो आवेदन करने से पहले वेब सर्च के जरिये अपने प्रोफेसरों के बारे में जानें। ये ही वे लोग हैं जो यह निर्णय करेंगे कि किन ग्रेजुएट सहायकों को स्वीकार किया जाना है। उन्हें आपके आवेदनों की समीक्षा से पहले आपके बारे में पता होना चाहिए।

वित्तीय सहायता के लिए आवेदन करने में हिचकिए मत। अगर आपका पहला आवेदन नामंजूर हो गया है तो दूसरी बार आवेदन करिए। इस अकादमिक विभाग या प्रवेश दफ्तर के किसी खास व्यक्ति को संबोधित करें। अगर आप पहली बार में सफल नहीं होते, तो फोन करके पता कीजिए कि आपका आवेदन सफल क्यों नहीं हुआ और दोबारा आवेदन कीजिए। अगले साल ज्यादा मजबूती के साथ आवेदन करें।

अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए वित्तीय मदद सीमित है और प्रतिस्पर्धा बहुत ज्यादा। अपनी सफलता की संभावनाएं बढ़ाने के लिए आपको दिखाना होता है कि आपकी अकादमिक योग्यताएं पहले दर्जे की हैं। कड़ी मेहनत कर टोफेल, सैट, जीमैट या जीआरई का ऊंचा स्कोर हासिल करें। यह भी बताइए कि कुछ निजी स्रोत भी आपके पास हैं। अपनी वित्तीय जरूरत समझाइए और साफ-सुथरा, संपूर्ण और अच्छी तरह शोध किया आवेदन भेजिए। □

लेखिका: *मार्टिना शुल्ज हैंबर्ग, जर्मनी स्थित अमेरिकन सेंटर में शिक्षा सलाहकार हैं।*